P.G-SEM-III
CC-10

सुशील कुमार

1. साकेत में नवम सर्ग के आधार पर भारतीय गृहिणी की जीवन का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर :- 'साकेत' में पूरी रामायण है जिसे बारह सर्गों में विभाजित किया गया है।
संक्षेप में, इन सर्गों की कथा इस प्रकार है—
प्रथम सर्ग – इस सर्ग में राम के अवतार लेने के कारण अयोध्या नगरी के वैभव का वर्णन और लक्ष्मण–ऊर्मिला के दाम्पत्य जीवन का सुखद एवं हास-परिहासपूर्ण चित्रण है।
द्वितीय सर्ग – इस सर्ग में मंथरा-कैकयी-संवाद, राजा दशरथ से कैकयी द्वारा वरदान माँगना, राजा दशरथ का पुत्र-विछोह से अत्यंत अधीर होना वर्णित है।
तृतीय सर्ग – इस सर्ग में राम को कैकयी और राजा दशरथ द्वारा वनगमन की सूचना मिलती है। लक्ष्मण को बहुत क्रोध आता है, राम उन्हें शांत कर देते हैं। लक्ष्मण भी राम के साथ चौदह वर्षों तक वन में रहने का संकल्प करते हैं।
चतुर्थ सर्ग – इस सर्ग में राम और लक्ष्मण कौशल्या माँ को अपने पिता महाराज दशरथ का आदेश सुनाते हैं। कौशल्या विचलित हो उठती है। सुमित्रा के समझाने पर वे धैर्य धारण करती हैं। सुमंत राम को वन-गमन से रोकने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु राम नहीं रुकते। सीता राम के साथ वन जाने को तैयार हो जाती है, पर

classmate
Date
Page

ऊर्मिला किसी प्रकार अपने मन को समझा लेती है। अन्त में, वल्कल धारण करके राम, सीता और लक्ष्मण चौदह वर्षों के लिए वन जाने को उद्यत हो जाते हैं।

पंचम सर्ग – इस सर्ग में वन जाने से पूर्व राम का राजगुरू वशिष्ठ के दर्शन करना, राजरथ पर बैठकर अयोध्या की सीमा पार करना, निषादराज द्वारा स्वागत पाना, भारद्वाज ऋषि के आश्रम में जाना, महर्षि वाल्मीकि के दर्शनार्थ चित्रकूट जाना और वहीं कुटी बनाकर रहना आदि घटनाएँ वर्णित है।

षष्ट सर्ग – इस सर्ग में राम, लक्ष्मण और सीता के वन चले जाने के पश्चात् पुरवासियों का दशरथ कौशल्या, सुमित्रा, ऊर्मिला आदि का शोक और सुमंत के लौट आने पर निराश होकर राजा दशरथ का प्राण-त्याग, भरत को राजा की मृत्यु की सूचना भिजवाना आदि कथाएँ वर्णित है।

सप्तम सर्ग – इस सर्ग में भरत और शत्रुघ्न का अयोध्या लौटना, अपनी माँ के कुकृत्य पर ग्लानि प्रकट करना, कौशल्या का भरत को समझाना और राजा दशरथ की अंत्येष्ट-क्रिया का विश्लेषण है।

अष्टम सर्ग – इस सर्ग में राम के चित्रकूट का जीवन, भरत के साथ अयोध्यावासियों का राम को मनाने आना, सभा का आयोजन होना

कैकयी का प्रायश्चित करना, लक्ष्मण-ऊर्मिला मिलन और अन्त में भरत ने राम की पादुका लेकर लौटना आदी घटनाएँ का वर्णन है।

नवम सर्ग - इस सर्ग में ऊर्मिला के विरह का वर्णन है।

दशम सर्ग - इस सर्ग में राम आदि चारों भाइयों तथा सीता, ऊर्मिला आदि चारों बहनों के बचपन, धनुष-यज्ञ तोड़ना, परशुराम के दम्भ का नाश और विरह-विदग्धा ऊर्मिला का विलाप वर्णित है।

एकादश सर्ग - इस सर्ग में भरत के त्यागमय जीवन का शत्रुघन द्वारा बताई गई घटनाओं का, राम का चित्रकूट से प्रस्थान, अगस्त्य ऋषि से दिव्यास्त्र की प्राप्ति, शूर्पणखा के नाक कटना, सीता-हरण, जटायु मरण, कबंधासुर-वध, शबरी का अतिथ्य-ग्रहण, सुग्रीव का मिलन, बालि-वध, लंका दहन, विभीषण का राम की शरण में आना, राम-रावण युद्ध कुम्भकर्ण-वध आदि घटनाओं का वर्णन है।

द्वादश सर्ग - राम और रावण के युद्ध का तथा लक्ष्मण के मूर्छित होने का सामाचार सुनकर अयोध्यावासियों का सेना लेकर राम की सहायता के लिए चलना, गुरु वशिष्ट का अपने योगबल से राम और रावण की वास्तविक दशा दिखाकर शांत करना, लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर होना, मेघनाथ वध, रावण-वध, राम का अयोध्या लौटना और ऊर्मिला का पुनर्मिलन आदि घटनाएँ वर्णित हैं।